Dr.Uttam Kumar
SRAP College,Barachakia
Mob no-8210561032

Faculty -Commerce
Subject -Business Organisation
Class -2nd Semester
Session-2023-27

Topic

Meaning Of Business Organisation

व्यावसायिक संगठन के कार्य
(FUNCTIONS OF BUSINESS ORGANISATION)

व्यावसायिक संगठन के कार्य क्षेत्र में निम्नलिखित क्रियाएँ सम्मिलित की जाती हैं—

(1) **उत्पादन एवं निर्माण कार्य** (Production and Manufacturing Functions)—व्यवसाय का सबसे प्राथमिक कार्य माल एवं सेवाओं का उत्पादन तथा निर्माण करना है। इसके अन्तर्गत कच्चे माल को विभिन्न उत्पादन एवं निर्माण प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित अथवा अर्द्ध-निर्मित माल में परिणित किया जाता है। उत्पादन एवं निर्माण कार्य द्वारा माल के स्वरूप में परिवर्तन हो जाता है, जैसे--लकड़ी से फर्नीचर बनना, इस्पात से मशीनें बनना तथा कागज से कॉपियाँ बनना आदि।

(2) **वित्तीय कार्य** (Financial Functions)—'वित्त व्यवसाय का जीवन-रक्त' है। व्यवसाय का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य व्यवसाय के लिए पर्याप्त मात्रा में वित्त की व्यवस्था करना है। प्रारम्भ में व्यवसायी अपने निजी साधनों से वित्त का प्रबन्ध करता है तत्पश्चात् वह ऋणों का प्रबन्ध करता है। ये वित्तीय कार्य व्यवसायी को किसी व्यावसायिक संस्था की स्थापना से लेकर उसकी समाप्ति के बाद तक करने पड़ते हैं। किन्तु इस कार्य का निष्पादन करते समय व्यवसायी को सदैव यह ध्यान देना चाहिए कि व्यवसाय में वित्तीय सन्तुलन निरन्तर बना रहे। प्राय: यह देखा जाता है कि संस्था का वित्तीय सन्तुलन बिगड़ जाता है जिससे अति-पूँजीकरण (Over-capitalisation) अथवा अल्प-पूँजीकरण (Under-capitalisation) की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, परिणामस्वरूप संस्था को दिवालियापन का मुँह देखना पड़ जाता है। अत: व्यवसाय में वित्त की मात्रा आवश्यकता के अनुरूप होनी चाहिए।

(3) **विक्रय कार्य** (Selling Function)—व्यवसाय का तीसरा महत्वपूर्ण कार्य विक्रय कार्य है। यह सभी आर्थिक क्रियाओं का आदि और अन्त है। जिस किसी माल का उत्पादन अथवा निर्माण होता है उसका बाद में विक्रय किया जाता है। इस कार्य के बिना व्यवसाय को व्यवसाय नहीं कहा जा सकता है। यही कारण है कि व्यवसाय में इस कार्य को प्राथमिकता दी जाती है और इसके निष्पादन के लिए कुशल विक्रेताओं की नियुक्ति की जाती है।

(4) **क्रय कार्य** (Purchasing Function)—व्यवसाय का चौथा प्राथमिक कार्य क्रय कार्य है। इस कार्य का निष्पादन सभी प्रकार के व्यवसायों में होता है। उदाहरण के लिए, निर्माणी उद्योग में कच्चे माल का क्रय करना पड़ता है, जबकि व्यापार में व्यापारी द्वारा निर्मित माल का क्रय करना पड़ता है। इस कार्य के निष्पादन के लिए कुशल क्रय विशेषज्ञों की नियुक्ति करनी पड़ती है।

(5) **लेखाकर्म कार्य** (Accounting Function)—यह व्यवसाय का पाँचवाँ महत्वपूर्ण कार्य है। इस सम्बन्ध में व्यवसाय में एक पुरानी कहावत भी है कि 'पहले लिख और पीछे दे, भूल पड़े कागज से ले।' इसका आशय यह है कि प्रत्येक सौदे को पहले लिखना चाहिए फिर लेन-देन करना चाहिए। भूल पड़ने पर लिखे जाने के आधार पर वसूली की जा सकती है। आज लेखाकर्म कार्य का महत्व और भी अधिक हो गया है। इसका कारण यह है कि एक समय था जबकि व्यक्ति व्यवसाय का स्वामी, पूँजीपति तथा प्रबन्धक तीनों एक ही होता था, किन्तु आज स्वामी, पूँजीपति तथा प्रबन्धक तीनों अलग-अलग व्यक्ति होते हैं। व्यवसाय के स्वामी प्रतिवर्ष प्रबन्धकों से व्यवसाय का लेखा-जोखा माँगते हैं। इसी प्रकार सरकारी उपक्रमों में भी लेखाकर्म कार्य का महत्व बढ़ गया है।

(6) **इन्जीनियरिंग कार्य** (Engineering Function)—आधुनिक व्यवसाय का इन्जीनियरिंग कार्य भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। आज के वृहद्स्तरीय व्यवसाय में तो इस कार्य का महत्व और भी बढ़ गया है। यह कार्य भी व्यवसाय की स्थापना से पूर्व ही प्रारम्भ करना पड़ता है जो व्यवसाय के जीवन-पर्यन्त निरन्तर चलता रहता है। आधुनिक व्यवसाय के इस इन्जीनियरिंग कार्य को पुन: निम्न दो भागों में विभक्त किया गया है—(1) उत्पादन डिजाइन, तथा (2) संयन्त्र इन्जीनियरिंग।

(7) **कर्मचारी अथवा स्टाफिंग कार्य** (Personnel or Staffing Function)—एक समय था जब व्यवसाय का क्षेत्र केवल स्थानीय सीमाओं तक ही सीमित था। उत्पादन/निर्माण, विक्रय तथा संचालन का कार्य एक ही व्यक्ति सम्पन्न कर लिया करता था, क्योंकि उत्पादन तथा उपभोक्ता दोनों में प्रत्यक्ष सम्पर्क था। किन्तु आज व्यवसाय का क्षेत्र स्थानीय सीमाओं को पार कर अन्तर्राष्ट्रीय रूप धारण कर चुका है। फलत: व्यवसाय का स्वामित्व तथा प्रबन्ध दोनों एक-दूसरे से पृथक् हो चुके हैं। आधुनिक व्यवसाय का महत्वपूर्ण कार्य व्यवसाय की आवश्यकता के अनुसार योग्य, अनुभवी तथा कुशल कर्मचारियों की नियुक्ति करना भी है। यही नहीं, नियुक्ति करने के पश्चात् इनके प्रशिक्षण, स्वास्थ्य, सुरक्षा, कल्याण आदि पर भी ध्यान देना पड़ता है। इन कार्यों का निष्पादन करने के लिए बड़े व्यावसायिक संस्थान एक पृथक् विभाग की स्थापना करते हैं, जिसे कर्मचारी अथवा सेविवर्गीय विभाग (Personnel Department) कहते हैं। उदाहरण के लिए, डी. सी. एम., टाटा, बिड़ला, जे. के. आदि व्यवसायियों ने अपने यहाँ इस कार्य के निष्पादन के लिए पृथक् सेविवर्गीय विभाग की स्थापना की है।

(8) **कार्यालय कार्य** (Office Function)—किसी भी व्यावसायिक संस्थान का कार्यालय अभिन्न अंग होता है। जिस प्रकार हम किसी ऐसी घड़ी की कल्पना नही कर सकते जिसमें मुख्य कमानी (Main Spring) न हो, उसी प्रकार हम किसी ऐसे व्यवसाय की कल्पना नही कर सकते जिसका अपना कार्यालय न हो। **श्री डिक्सी** के अनुसार, ''व्यवसाय में कार्यालय का वही स्थान है जोकि एक घड़ी में मुख्य कमानी का होता है।'' व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण कार्य कार्यालय की स्थापना करना भी है। कार्यालय के माध्यम से ही समूचे व्यवसाय का संचालन एवं नियन्त्रण का कार्य सम्पन्न किया जाता है।

(9) **विविध कार्य** (Miscellaneous Functions)—उपर्युक्त प्रमुख कार्यों के अतिरिक्त व्यवसाय के निम्न कार्य भी है—(i) नवाचार (Innovation) का कार्य, अर्थात् उपभोक्ता के लिए नई-नई वस्तुएँ उपलब्ध करना। (ii) उत्पादन नियोजन तथा नियन्त्रण का कार्य। (iii) उपभोक्ता सन्तुष्टि का कार्य।

व्यापार, वाणिज्य तथा उद्योग में अन्तर
(DIFFERENCE AMONG TRADE, COMMERCE AND INDUSTRY)

व्यापार, वाणिज्य तथा उद्योग के अन्तर को निम्नलिखित तालिका द्वारा सरलता से समझा जा सकता है—

अन्तर का आधार	व्यापार (Trade)	वाणिज्य (Commerce)	उद्योग (Industry)
1. आशय	व्यापार से आशय वस्तुओं के क्रय-विक्रय से है।	वाणिज्य एक व्यापक शब्द है, जिसके अन्तर्गत केवल क्रय-विक्रय ही नहीं अपितु उन सभी साधनों का समावेश करते हैं जो कि व्यापार की प्रगति में सहायक होते हैं।	प्रकृति से उपलब्ध कच्चे माल से वस्तुओं का निर्माण करने को ही उद्योग कहते हैं।
2. क्षेत्र	व्यापार का क्षेत्र सबसे सीमित होता है, क्योंकि इसमें केवल वस्तुओं का क्रय-विक्रय ही आता है।	व्यापार की तुलना में इसका क्षेत्र व्यापक है, क्योंकि इसमें व्यापार के अतिरिक्त व्यापार के सहायकों को भी सम्मिलित करते हैं।	उद्योग में मुख्यत: निर्माण- उद्योग तथा निष्कर्षण उद्योग दोनों को ही सम्मिलित करते हैं।
3. उद्गम	व्यापार का उद्गम वस्तु विनिमय से हुआ है।	वाणिज्य का उद्गम व्यापार के स्वरूप के विकास से हुआ है।	उद्योग का उद्गम 18वीं शताब्दी के मध्य औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप हुआ है।
4. परस्पर-निर्भरता	व्यापार, वाणिज्य तथा उद्योग दोनों की ही आधार शिला है।	वाणिज्य का विकास व्यापार तथा उद्योग दोनों की प्रगति पर निर्भर करता है।	वाणिज्य तथा व्यापार की आधारशिला होते हुए भी उद्योग का पृथक् अस्तित्व है।